सहजानंद शास्त्रमाला

धर्मबोध (पूर्वार्द्ध)

रचयिता

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी "सहजानन्द" महाराज

प्रकाशक

श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ

एवं

श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास

गांधीनगर, इन्दौर

Online Version : 001

(सहजानन्द साहित्यिक संस्थावों द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)
भा. दि. जैन आत्म विज्ञान परीक्षा बोर्ड द्वारा आद्यबोध प्रथमखंड की परीक्षा के लिए स्वीकृत।

धर्मबोध पूर्वार्द्ध

लेखक :—
आध्यात्मयोगी न्यायतीर्थ गुरुवर्य्य पूज्य श्री १०५ क्षुल्लक
मनोहर जी वर्णी 'सहजानन्द' महाराज

प्रकाशक :—
अशोक कुमार एस जैन
महामंत्री भा० दि० जैन आत्म विज्ञान परीक्षा बोर्ड
प्रधान कार्यालय २१/२७ शक्ति नगर, दिल्ली-७

[स्करण ३३००] १९७७ लागत [५० पैसे

धर्मबोध पूर्वार्द्ध

पाठ १

णमोकार मन्त्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

अर्थ :—लोकमें सब अरहंतोंको नमस्कार हो, सिद्धोंको नमस्कार हो, आचार्योंको नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो और साधुओंको नमस्कार हो।

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु—इन पांचोंको पंच-परमेष्ठी कहते हैं।

इस णमोकारमन्त्रमें ५ वाक्यपद, ३५ अक्षर व ५८ (११+९ +११+१२+१५=५८) मात्रायें हैं।

एसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं॥

इस णमोकारमन्त्रका ध्यान सब पापोंका नाश करने वाला है और सब मंगलोंमें पहिला मगल है।

णमोकारमन्त्रमें किसी व्यक्तिको नमस्कार नहीं किया गया, किन्तु जो आत्मा शुद्ध हैं तथा जो आत्मा शुद्ध होनेके प्रयत्नमें सफल हो रहे हैं, उन्हें गुणोंकी दृष्टिसे नमस्कार किया गया है।

जो आत्मा वीतराग (रागद्वेषादिदोषरहित) व सर्वज्ञ हैं, वे अरहंत हैं। ये जबतक सिद्ध नहीं होते तबतक ही शरीरसहित हैं।

जो आत्मा अरहंत होनेके बाद शरीरसे भी रहित हो जाते हैं, वे सिद्ध हैं। ये सर्वोपरि लोकके अन्तमें विराजमान हैं।

जो साधु वीतराग रहनेके लिए चरित्र पालते हैं व अन्य साधुओंको चरित्र पालन कराते हैं, वे साधु आचार्य हैं।

जो साधु चरित्र पालते हुए साधुओंको ज्ञान सिखाते हैं, वे साधु उपाध्याय हैं।

जो निर्ग्रन्थ होकर वीतराग रहनेके लिए चरित्र पालते हैं, वे साधु हैं।

जन्म मरण रति वेदना, आदि विकार न रंच।
जाने लोक अलोक सब, बंदू श्री अरहंत ॥१॥

देह विकार न कर्म है, बसें लोकके अन्त।
बंदू ज्ञानमयी अमल, स्वच्छ सिद्ध भगवंत ॥२॥

मोक्षमार्गका आचरण, करे करावे संत।
बंदू मुनि आचार्यको, अनुपम करुणावंत ॥३॥

साधुनको नित ज्ञानरत, देते विद्यादान।
उपाध्याय योगीशको, नितप्रति करूं प्रणाम ॥४॥

सम्यक् दर्शन ज्ञान तप, चारित समतावंत।
निरारम्भ निर्ग्रन्थ चित्, प्रणमूं साधु महंत ॥५॥

प्रश्नावली

१. णमोकारमन्त्रको शुद्ध पढ़ो तथा बताओ कि णमोकारमन्त्र में कितने वाक्य हैं ?

२. णमोकारमन्त्रमें किन-किनको नमस्कार किया है और उन सबका एक नाम क्या है ?

३. परमेष्ठी कितने और कौन-कौन हैं ? नाम बताओ।

४. णमोकारमन्त्रमें किसी विशेष नाम वालेको नमस्कार किया है या

नहीं और वह क्यों ?

५. णमोकारमन्त्रमें कितने अक्षर हैं ? गिनावो।

६. सिद्ध व साधु किन्हें कहते हैं ? तुम्हें सिद्ध मिल सकते हैं या साधु ?

—०—

पाठ २

चत्तारि दण्डक

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

अर्थ :—मंगल चार हैं—अरहंत मंगल हैं, सिद्ध मंगल हैं, साधु मंगल हैं, केवलीद्वारा प्रणीत धर्म मंगल है।

लोकमें उत्तर चार हैं—अरहंत लोकमें उत्तम हैं, सिद्ध लोकमें उत्तम हैं, साधु लोकमें उत्तम हैं और केवलीके द्वारा प्रणीत धर्म लोकमें उत्तम हैं।

मैं चार (की) शरणको प्राप्त होता हूं—अरहंतोंकी शरणको प्राप्त होता हूं, सिद्धोंकी शरणको प्राप्त होता हूं, साधुवोंकी शरणको प्राप्त होता हूं और केवलीके द्वारा प्रणीत धर्मकी शरणको प्राप्त होता हूं।

प्रभुभाषित सद्धर्म सत्, साधु सिद्ध अरहंत।
अध नाशे सुख देय ये, मंगल चार महंत ॥१॥
प्रभुभाषित सद्धर्म सत्, साधु सिद्ध अरहंत।
लोकोत्तम ये चार हैं, करें कष्टका अंत ॥२॥

प्रभुभाषित सद्धर्म सत्, साधु सिद्ध अरहंत ।
शरण चार निर्दोषपा, पाऊं शान्ति अनन्त ।।३।।

प्रश्नावली

१. मंगल पाठको शुद्ध पढ़ो और बताओ कि मंगल कितने और कौन-कौन हैं ?
२. लोकोत्तमका क्या मतलब है ? लोकोत्तम कितने हैं ? नाम बताओ ।
३. साधु लोकोत्तम है—ऐसा कहने में साधु शब्द से कौन-कौन से परमेष्ठी आजाते हैं ?
४. अन्तमें किसकी शरणकी बात कही गई है ?
५. चत्तारि दण्डकको पूरा पढ़ो और शरणपदकका अर्थ करो ।
६. पव्वज्जामि, लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो—इन शब्दोंका अर्थ बताओ ।

—o—

पाठ ३

वर्तमान २४ तीर्थकरोंके नाम व चिन्ह

क्र० सं०	तीर्थंकरोंके नाम	चिन्ह
१	श्री ऋषभनाथ जी	बैल
२	,, अजितनाथ जी	हाथी
३	,, संभवनाथ जी	घोड़ा
४	,, अभिनन्दननाथ जी	बन्दर
५	,, सुमतिनाथ जी	चकवा
६	,, पद्मप्रभ जी	कमल
७	,, सुपार्श्वनाथ जी	सांथिया
८	,, चन्द्रप्रभ जी	चन्द्रमा
९	,, पुष्पदन्त जी	मगर
१०	,, शीतलनाथ जी	कल्पवृक्ष

क्र० सं०	तीर्थंकरोंके नाम	चिन्ह
११	श्री श्रेयांसनाथ जी	गैंडा
१२	,, वासुपूज्य जी	भैंसा
१३	,, विमलनाथ जी	शूकर
१४	,, अनन्तनाथ जी	सेही
१५	,, धर्मनाथ जी	वज्रदंड
१६	,, शांतिनाथ जी	हरिण
१७	,, कुन्थुनाथ जी	बकरा
१८	,, अरनाथ जी	मच्छ
१९	,, मल्लिनाथ जी	कलश
२०	,, मुनिसुव्रतनाथ जी	कछुवा
२१	,, नमिनाथ जी	लालकमल
२२	,, नेमिनाथ जी	शंख
२३	,, पार्श्वमाथ जी	सर्प
२४	,, महावीर जो	सिंह

इनमें से श्री ऋषभनाथ जी को आदिनाथ, पुष्पदन्त जी को सुविधिनाथ भी कहते हैं।

श्री महावीर जी के ५ नाम हैं—महावीर, वर्द्धमान, सन्मति, वीर और अतिवीर।

ये २४ तीर्थंकर इस भरतक्षेत्रमें अभी चौथे कालमें हो चुके हैं। इनकी परम्परासे वर्तमानमें तीर्थ चला आ रहा है, इसलिए इन्हें वर्तमान तीर्थंकर कहते हैं।

तीर्थंकर उन्हें कहते हैं जो विशेषरूपसे धर्मतीर्थके नेता होते हैं। इनके गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और निर्वाण ये ५ कल्याणक होते हैं।

चिन्ह :—जब तीर्थंकरका जन्म होता है, तब इन्द्रादि देवगण तीर्थंकरको जन्माभिषेकके लिए मेरु पर्वतपर ले जानेके लिए उनके माता-पिता के घरपर आते हैं। इन्द्राणी बालकको लेकर इन्द्रको

सौंपती है। उस समय उनके पैरमें जो चिन्ह इन्द्रको पहिले दीखता है, इन्द्र उस चिन्हको अपनी ध्वजामें बनाता है और उस चिन्हकी तभी से प्रसिद्धि हो जाती है।

ऋषभ अजित संभव प्रभू, अभिनन्दन जगनाथ।
सुमति पद्म सूपार्श्व जिन, चन्द्रप्रभ शिवनाथ ॥१॥
पुष्पदंत शीतल प्रभू, श्रेयांस वासुपूज्य।
विमल अनंत सुधर्म जिन, शान्तिनाथ जगपूज्य ॥२॥
कुन्थुनाथ अर मल्लि जिन, श्री मुनिसुव्रतनाथ।
नमी नेमि श्री पार्श्वप्रभु, वर्द्धमान मम नाथ ॥३॥

प्रश्नावली

१. तीर्थंकरोंके ये चिन्ह कब और कैसे प्रसिद्ध होते हैं ?
२. तीर्थंकर किन्हें कहते हैं और उनके कल्याणक कितने होते हैं ? उनके नाम बताओ।
३. वर्तमानमें किस तीर्थंकरका तीर्थ चल रहा है ?
४. चौबीसवें तीर्थंकरके कितने नाम हैं ? बताओ।
५. ये चौबीस तीर्थंकर कब हुए और इस समय इनका आत्मा कहां है ?
६. नवेंसे लेकर सोलहवें तक आठ तीर्थंकरों के नाम बताओ।
७. नमिनाथ, सुपार्श्वनाथ, अभिनन्दननाथ, धर्मनाथ, शांतिनाथ—इन तीर्थंकरोंके चिन्ह बताओ।
८. बकरा, शंख, मगर, सेही, चकवा—ये किन तीर्थंकरोंके चिन्ह हैं ?
९. ये तीर्थंकर २४ ही होते हैं या कम ज्यादा ?

—०—

पाठ ४
विद्यमान २० तीर्थंकर

जहां हम रहते हैं, यह जम्बूद्वीपका भरतक्षेत्र है। यहां तो वर्तमान २४ तीर्थंकर हो चुके हैं और जम्बूद्वीपमें १, धातकीखण्डमें २, पुष्करार्द्धमें २, इस प्रकार ढाई द्वीपमें विदेह ५ हैं। प्रत्येक विदेहमें पूर्वविदेह व पश्चिमविदेह, ऐसे दो दो विभाग हैं। प्रत्येक विदेह विभागमें १६-१६ नगरियां हैं, प्रत्येक नगरीमें एक ही समयमें एक एक तीर्थंकर हो सकते हैं, परन्तु कमसे कम प्रत्येक विदेहमें ४-४ तीर्थंकर तो नियमसे रहते ही हैं। इस प्रकार वहांपर इस समय २० तीर्थंकर हैं, उन्हें विद्यमान बीस तीर्थंकर कहते हैं। उनके नाम ये हैं—

१. श्री सीमंधरजो, २. श्रो युग्मंधर जी, ३. श्री बाहुजी, ४. श्री सुबाहु जी, ५. श्री संजात जी, ६. श्री स्वयंप्रभजी, ७. श्री ऋषभानन जी, ८. श्री अनन्तवीर्य जी, ९. श्री सूरप्रभ जी, १०. श्री विशालकीर्ति जी, ११. श्री वज्रनाथ जी, १२. श्री चन्द्रानन जी, १३. श्री भद्रबाहु जी, १७. श्री वीरसेन जी, १८. श्री महाभद्र जी, १९. श्री देवयशजी, २०. श्री अजितवीर्य जी।

सीमंधर युग्मंधर वाहु, सुवाहु संजात स्वयंप्रभ जिन जी।
ऋषभानन सु अनंतवीर्य जी, सूरप्रभ सु विशालकीर्ति जी॥
वज्रनाथ चन्द्रानन भद्र-बाहु भुजंगम श्री ईश्वर जी।
नेमिप्रभ नमूं वीरसेन महा-भद्र देवयश अजितवीर्य जी॥

(शिक्षक महोदय ढाई द्वीपका चित्र खींचकर उक्त बातको विद्यार्थियों को समझा सकते हैं।)

प्रश्नावली

१. विदेहके बीस तीर्थंकरोंके नाम गिनाओ।

२. विदेह क्षेत्र कितने द्वीपोंमें है ?

३. जम्बूद्वीप में विदेह क्षेत्र एक तरफ है या बीच में ?

४. ये बीस तीर्थंकर इस समय हैं या नहीं ?

—०—

पाठ ५

देवस्तुति

(पं० श्री दौलतराम जी द्वारा रचित)

सर्वप्रथम "ओम जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु" कहकर णमोकारमन्त्र पढ़ें, पश्चात् चत्तारिदण्डक पढ़ें फिर देवस्तुति पढ़ें।

दोहा

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि निजानन्द रसलीन।
सो जिनेन्द्र जयवंत नित अरि रज रहस विहीन॥

पद्धरिछन्द

जय वीतराग विज्ञानपूर। जय मोहतिमिरको हरनसूर।
जय ज्ञान अनंतानन्त धार। दृगसुखवीरजमण्डित अपार॥१॥
जय परमशान्तमुद्रासमेत। भविजनको निज अनुभूति हेत।
भविभागन वच योगे वशाय। तुम ध्वनि ह्वै सुनि विभ्रम नशाय॥२॥
तुम गुण चिन्तत निजपर विवेक। प्रगटै विघटै आपद अनेक।
तुम जगभूषण दूषणविमुक्त। सब महिमायुक्त विकल्पमुक्त॥३॥
अविरुद्ध शुद्ध चेतनस्वरूप। परमात्म परमपावन अनूप।
शुभ अशुभविभाव अभाव कीन। स्वाभाविक परिणतिमय अछीन॥४॥
अष्टादशदोषविमुक्त धीर। स्वचतुष्टयमय राजत गंभीर।
मुनि गणधरादि सेवत महन्त। नव केवललब्धिरमा धरन्त॥५॥
तुम शासन सेय अमेय जीव। शिव गये जांहि जैहैं सदीव।
भव सागरमें दुःख छारवारि। तारनको और न आप टारि॥६॥
यह लखि निजदुखगदहरणकाज। तुम ही निमित्तकारण इलाज।
जानै तातैं मैं शरण आय। उचरौं निजदुख जो चिर लहाय॥७॥

मैं भ्रम्यौ अपनपौ विसरि आप । अपनाये विधिफल पुण्यपाप ।
निजको परका करता पिछान । परमें अनिष्टता इष्ट ठान ॥८॥
आकुलित भयौ अज्ञान धारि । ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वारि ।
तन परिणति में आपौ चितारि । कबहूं न अनुभवौ स्वपदसार ॥९॥
तुमको बिन जाने जो किलेश । पाये सो तुम जानत जिनेश ।
पशु नारक नर सुरगति मंझार । भव धरि धरि मर्यो अनंत बार ।१०।
अब काललब्धि वलतैं दयाल । तुम दर्शन पाय भयौ खुशाल ।
मन शांत भयौ मिट सकल द्वन्द । चाख्यो स्वातमरस दुखनिकंद ।११।
तातैं अब ऐसी करहु नाथ । बिछुरें न कभी तुव चरण साथ ।
तुम गुणगणको नहिं छेव देव । जगतारणको तुव विरद एव ॥१२॥
आतमके अहित विषय कषाय । इनमें मेरी परिणति न जाय ।
मैं रहूं आपमें आप लीन । सो करहु होउं ज्यौं निजाधीन ॥१३॥
मेरे न चाह कछु और ईश । रत्नत्रयनिधि दीजै मुनीश ।
मुझ कारजके कारण सु आप । शिव करहु हरहु मम मोहताप ॥१४॥
शशि शांतिकरण तप हरणहेत । स्वयमेव तथा तुम कुशल देत ।
पीवत पियूष ज्यौं रोग जाय । त्यौं तुव अनुभवतैं भव नशाय ॥१५॥
त्रिभुवन तिहुंकाल मंझार कोय । नहिं तुम बिन निजसुखदाय होय ।
मो उर यह निश्चय भयौ आज । दुःखजलधिउधारण तुम जहाज ।१६।

दोहा

तुम गुणगणमणिगणपति, गणत न पावहिं पार ।
दौल स्वल्पमति किमु कहै, नमहुं त्रियोग सम्हार ॥

प्रश्नावली

१. मन्दिरमें जाकर स्तुति पढ़नेसे पहिले क्या कहना चाहिये ?
२. यह स्तुति किनकी बनाई हुई है ?
३. "जय परम शांत" यहांसे लेकर 'परिणतिमय अछीन' यहां तक पढ़ो ।

४. इस स्तुतिके अन्तके दो छन्द व दोहा पढ़ो।

५. स्तुति पढ़नेसे क्या लाभ है ?

६. किन्हीं दो छन्दोंके अर्थ करो।

पाठ ६

जीव व जीवके भेद

पदार्थ दो तरहके होते हैं—(१) जीव, (२) अजीव।

१. जीव उन्हें कहते हैं जिनमें जानने देखनेकी शक्ति हो। जैसे—घोड़ा, बैल, मकौड़ा, पेड़, पृथ्वी, पानी, पक्षी, देव, मनुष्य, नारकी आदि।

२. अजीव उन्हें कहते हैं जिनमें जानने देखनेकी शक्ति न हो। जैसे—दवात, कलम, सन्दूक, टोपी, रोटी आदि।

जीव के भेद—

जीव दो प्रकारके होते हैं—(१) मुक्त जीव, (२) संसारी जीव।

१. मुक्त जीव उन्हें कहते हैं जो कर्मोंसे छूट गए हैं। जिन्होंने सदाके लिए सच्चा सुख पा लिया है। ये संसार (गति) में लौटकर कभी नहीं आते, इन्हें सिद्ध भी कहते हैं। अरहंत भगवानको जीवन्-मुक्त कहते हैं।

२. संसारी जीव उन्हें कहते हैं जो संसारमें घूमकर जन्म-मरण के दुःख उठाते हों।

संसारी जीवके भेद—

संसारी जीव दो प्रकार के होते हैं—(१) त्रस जीव, (२) स्थावर जीव।

त्रस जीव :—उन्हें कहते हैं जिनके त्रसनामकर्मका उदय हो अर्थात् दो इन्द्रिय, तीन इन्द्रिय: चार इन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीवोंको त्रस कहते हैं। जैसे—लट, चिउंटी, भौंरा, बैल, पक्षी, मनुष्य, देव, नारकी आदि।

स्थावर जीव उन्हें कहते हैं जिनके स्थावरनामकर्मका उदय हो अर्थात् एकेन्द्रिय जीवको स्थावर कहते हैं।

स्थावर जीवके भेद—

स्थावर जीव ५ प्रकारके होते हैं—१. पृथ्वीकायिक, २. जलकायिक, ३. अग्निकायिक, ४. वायुकायिक, ५. वनस्पतिकायिक।

१. पृथ्वीकायिक जीव उन्हें कहते हैं जिनका पृथ्वी ही शरीर हो। जैसे—मिट्टी, पत्थर, सोना, चांदी, लोहा, भोडल आदि। खानसे निकले हुए ये अजीव हैं।

२. जलकायिक जीव उन्हें कहते हैं जिनका जल ही शरीर हो। जैसे—पानी, ओला, ओस, बर्फ आदि।

३. अग्निकायिक जीव उन्हें कहते हैं जिनका अग्नि ही शरीर हो। जैसे—आग, बिजली आदि।

४. वायुकायिक जीव उन्हें कहते हैं जिनका वायु ही शरीर हो। जैसे—हवा, आंधी वगैरह।

५. वनस्पतिकायिक जीव उन्हें कहते हैं जिनका वनस्पति ही शरीर हो। जैसे पेड़, पत्ते, फल, फूल वगैरह।

वनस्पतिकायिक जीवके दो भेद हैं—(१) साधारण वनस्पति, (२) प्रत्येकवनस्पति।

१. साधारवनस्पति उन्हें कहते हैं जिनके साधारण नामकर्मका उदय हो। साधारण नामकर्मके उदयसे एक शरीरके अधिकारी अनेक जीव होते हैं। साधारण वनस्पतिका शरीर आँखोंसे नहीं दीख सकता। ये जीव एक बार नाड़ी चलनेके समयमें १८ बार जन्म मरण करते हैं। इनका दूसरा नामनिगोदिया जीव है।

२. प्रत्येकवनस्पति उन्हें कहते हैं जिनके प्रत्येक नामकर्मका उदय हो। प्रत्येक नामकर्मके उदयसे एक शरीरका अधिकारी एक ही जीव होता है। प्रत्येकवनस्पति हरित वनस्पतिको कहते हैं।

प्रत्येकवनस्पतिके दो भेद हैं १. साधारणसहित प्रत्येक (सप्रतिष्ठित प्रत्येक), २. साधारणरहित प्रत्येक (अप्रतिष्ठित प्रत्येक)।

१. साधारणसहित प्रत्येक (सप्रतिष्ठित प्रत्येक) मूली, रतालू, गाजर, घुइयाँ, शकरकन्द, पालकके पत्ते आदि हैं।

२. साधारणरहित प्रत्येक (अप्रतिष्ठित प्रत्येक) आम, नीबू, खरबूजा सन्तरा, मेथीकी भाजी, तुरई आदि हैं। ये अप्रतिष्ठित प्रत्येक भी शुरू में अत्यंत छोटी दशा में सप्रतिष्ठित प्रत्येक रहते हैं, बादमें अप्रतिष्ठित प्रत्येक हो जाते हैं।

धर्मात्मा पुरुष सप्रतिष्ठित प्रत्येकको नहीं खाते हैं, क्योंकि इनके खानेमें अनन्त स्थावर जीवोंकी हिंसा होती है।

प्रश्नावली

१. जीव किसे कहते हैं ? तुम मुक्त जीव हो या संसारी जीव ?
२. स्थावर जीव कितने तरहके होते हैं ? नाम बताओ।
३. अग्निकायिक जीव किसे कहते हैं? दृष्टान्तमें तीनके नाम बताओ।
४. साधारण वनस्पति किस स्थावरका भेद है ?
५. साधारण वनस्पति तुम्हें आंखोंसे दिखाई देता है या नहीं ?
६. मूली, शकरकन्द, तुरई, आम—ये कौनसी वनस्पति हैं ?
७. बालक, ओस, कीड़ा, बैल, मुक्तजीव, दवात, कुर्सी, ततइया, रोटी, पेड़, मिट्टी—इनमें कौन त्रस हैं और कौन स्थावर हैं ?
८. घोड़ा, बताशा, आदमी, कलम, संदूक—इनमेंसे कौन जीव हैं और कौन अजीव हैं ?

पाठ ७

इन्द्रिय व इन्द्रियोंके अनुसार जीवोंके भेद

इन्द्रिय उन्हें कहते हैं जिनसे संसारी जीवकी पहिचान हो।

इन्द्रियां ५ होती हैं—१. स्पर्शन (त्वचा), २. रसना (जीभ), ३. घ्राण (नाक), ४. चक्षु (आंख), ५. कर्ण (कान)।

संसारी जीव भी इन्द्रियोंकी अपेक्षा पांच प्रकार के होते हैं—

१ एकेन्द्रिय, २. द्वीन्द्रिय, ३. त्रीन्द्रिय, ४. चतुरिन्द्रिय और ५. पंचेन्द्रिय जीव।

१. स्पर्शन इन्द्रिय उसे कहते हैं जिसके द्वारा छूनेसे ठण्डा, गर्म

चिकना, हल्का, भारी, कड़ा, नर्मका ज्ञान हो।

जिन जीवोंके केवल यह स्पर्शन इन्द्रिय होती है, वे एकेन्द्रिय कहलाते हैं। जैसे पृथ्वी, पानी, आग, हवा और वनस्पति।

२. रसना इन्द्रिय उसे कहते हैं जिसके द्वारा चखनेसे खट्टा, मीठा, तीखा, कड़वा और कषायला रस (स्वाद) का ज्ञान हो।

जिन जीवोंके स्पर्शन और रसना—ये दो इन्द्रियां होती हैं, वे द्वीन्द्रिय जीव कहलाते हैं। जैसे लट, केंचुवा, जौंक, शंख, कौड़ी, सीप वगैरह।

३. घ्राण इन्द्रिय उसे कहते हैं जिसके द्वारा सूंघनेसे सुगन्ध तथा दुर्गन्धका ज्ञान हो।

जिन जीवोंके स्पर्शन, रसना, घ्राण—ये तीन इन्द्रियां होती हैं, वे त्रीन्द्रिय जीव कहलाते हैं। जैसे चिउंटी, चिउंटा, बिच्छू, कानखजूरा आदि।

४. चक्षु इन्द्रिय उसे कहते हैं जिसके द्वारा देखनेसे काला, पीला, नीला, लाल और सफेद रंग तथा इन रंगोंके मेलसे बने हुए नाना प्रकारके रंगोंका ज्ञान हो।

जिन जीवोंके स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु—ये चार इन्द्रियां होती हैं, वे चतुरिन्द्रिय जीव कहलाते हैं। जैसे मक्खी, मच्छर, टिड्डी, भौंरा, ततइया आदि।

५. कर्ण इन्द्रिय उसे कहते हैं जिसके द्वारा सुननेसे आवाज जानी जावे।

जिन जीवोंके पांचों इन्द्रियां होती हैं, वे पंचेन्द्रिय जीव कहलाते हैं। जैसे देव, नारकी, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि।

जिन जीवोंके जो इन्द्रिय ज्ञात हो, उन जीवोंके उससे पहिलेकी इन्द्रियां अवश्य होती हैं और आगेकी इन्द्रियां हों या न हों।

मुक्त अर्थात् सिद्ध भगवानके कोई भी इन्द्रिय नहीं होती और न उनके शरीर होता है।

प्रश्नावली

१. इन्द्रिय किसे कहते हैं और इन्द्रियां कितनी हैं? नाम बताओ।

२. इन्द्रियोंकी अपेक्षा संसारी जीव कितने तरह के हैं? नाम बताओ।

३. केंचुवा, कानखजूरा, मच्छर, देव, हवा, कौवा, रेलगाड़ी—ये

कितनी इन्द्रियां वाले जीव हैं ?

४. रसना इन्द्रिय किसे कहते हैं ? अग्निके यह इन्द्रिय है या नहीं ।

५. कर्ण इन्द्रियसे तुम क्या समझते हो ?

६. जिस जीवके आंख होती है, उसके नाक होगी या नहीं ?

७. जिस जीवके नाक होती है, उसके आंख होंगी या नहीं ?

८. मुक्त जीवके कितनी इन्द्रियां होती हैं ?

९. तुम्हारे कितनी इन्द्रियां हैं ? तीसरी इन्द्रियका नाम बताओ ।

१०. जन्मसे अन्धे और गूंगे बालकके कितनी इन्द्रियां हैं ?

—o—

पाठ ८

त्रस जीवोंकी विशेषतायें

त्रस जीव ४ तरहके होते हैं—१. द्वीन्द्रिय, २. त्रीन्द्रिय, ३. चतुरिन्द्रिय, ४. पंचेन्द्रिय जीव ।

पञ्चेन्द्रिय जीव दो तरह के होते हैं—१. संज्ञी (सैनी), २. असंज्ञी (असैनी) ।

१. संज्ञी जीव उन्हें कहते हैं जिनके मन हो, जिससे शिक्षा, उपदेश ग्रहण कर सकें । जैसे—देव, नारकी, मनुष्य तथा बैल, घोड़ा, कबूतर आदि सैनी पंचेन्द्रिय तिर्यंच ।

२. असंज्ञी जीव उन्हें कहते हैं जिनके मन न हो, जो शिक्षा, उपदेश ग्रहण न कर सकें । जैसे जलमें रहने वाले प्रायः सर्प कोई-कोई तोता आदि । असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव केवल तिर्यंचगतिमें होते हैं ।

असंज्ञी बंचेन्द्रियके सिवाय एकेन्द्रिय, द्वीन्दिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव भी असंज्ञी कहलाते हैं । ये सब तिर्यंचगतिमें ही पाये जाते हैं ।

पंचेन्दिय तिर्यंच तीन प्रकारके होते हैं—१. जलचर, २. थलचर, ३. नभचर ।

१—जलचर जीव उन्हें कहते हैं जो जलमें रहें । जैसे मगर,

मच्छ आदि। जलचर जीव जलसे बाहर बहुत समय तक रहनेपर जीवित नहीं रह सकते।

२—थलचर जीव उन्हें कहते हैं जो जमीनपर चलें, उड़ न सकें। जैसे घोड़ा, बैल, हाथी, कुत्ता, चूहा आदि।

३—नभचर जीव उन्हें कहते हैं जो आकाशमें उड़ सकें। जैसे चील, कौवा, चिड़िया, कबूतर आदि।

प्रश्नावली

१. त्रस जीव कितने प्रकारके हैं ? नाम बताओ।
२. विकलत्रयके कितने भेद हैं ? नाम बताओ।
३. संज्ञी जीव किसे कहते हैं और संज्ञी जीवके कितनी इन्द्रियां होती हैं ?
४. विकलत्रिक जीवोंके मन होता है या नहीं ?
५. थलचर जीव किन्हें कहते हैं ? तुम कौनसे जीव हो ?
३. चील, भौंरा, घोड़ा, स्त्री, मच्छ, पानीमें डुबकी लगाने वाला लड़का—ये कौन चर हैं ?
७. असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव किस गतिमें होते हैं ?
८. तुम सैनी हो या असैनी और वह क्यों ?

—०—

पाठ ९

गति

संसारी जीवों की अवस्थाविशेषको गति कहते हैं।

संसारी जीव ४ गतियोंमें होते हैं। वे गति ये हैं—१. नरकगति, २. तिर्यंचगति, ३. मनुष्यगति, ४. देवगति।

गतिकी अपेक्षा संसारी जीव भी ४ तरहके होते हैं—१. नारकी, २. तिर्यंच, ३. मनुष्य, ४. देव।

१. नरकगतिः—इस पृथ्वीके नीचे ७ नरक हैं। उनमें रहने वाले जीवोंको नारकी या नारक जीव कहते हैं। उनको भारी दुःख

सहना पड़ता है, ये जोव सज्ञो पंचेन्द्रिय ही होते हैं। नारकी जोवों की आयु कमसे कम दस हजार वर्ष और अधिकसे अधिक ३३ सागर की होती है।

२. तिर्यंचगति:—नारकी, देव और मनुष्योंको छोड़कर शेष सभी संसारी जोव तिर्थंच कहलाते हैं, उनकी गतिको तिर्यंचगति कहते हैं।

३. मनुष्यगति:—पुरुष, स्त्री, बालक, बालिकायें आदि मनुष्य-गतिके जीव हैं। मनुष्य ही तपस्या व ध्यान द्वारा मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

४. देवगति:—देव हाड़, मांसरहित उत्तम शरीर वाले होते हैं। इन्हें सैकड़ों और हजारों वर्षोंमें भूख लगती है, उस समय उनके कण्ठमें से अमृत झरता है, जिससे भूख और प्यास शान्त हो जाती है। इन्हें उत्तम भोग और उपभोगकी सामग्री मिलती है। जब कोई जीव मरकर देवोंमें जन्म ले, तब देवगतिका होना कहते हैं। देवों की आयु कमसे कम दस हजार वर्षकी होती है व अधिकसे अधिक ३३ सागर की होती है। देव १६ स्वर्गोंमें और ऊपरके विमानोंमें तथा अन्य जगह भी उत्पन्न होते हैं।

मुक्त अर्थात सिद्ध भगवानके कोईसी भी गति नहीं होती।

प्रश्नावली

१. गति किसे कहते हैं व गति कितनी होती हैं? नाम बताओ।
२. जो इन गतियोंमें रहते हैं, उनके क्या-क्या नाम कहलाते हैं?
३. नरक कहां पर है? वहां सुख है या दुःख! वहां कितने दिन रहना पड़ता है!
४. तिर्यंचगति किसे कहते हैं! दस तिर्यंच जीवोंके नाम लो।
५. सबसे अच्छी गति कौनसी है और वह क्यों!
६. देवोंका सुख और शरीर कैसा होता है! देव कहां रहते हैं!
७. मुक्त जीव किस गतिके जीव हैं!

—:०:—

पाठ १०

भावना

बार-बार अच्छा विचार करनेको भावना कहते हैं।

ये भावना १२ होती हैं—१. अनित्य भावना, २. अशरण भावना, ३. संसार भावना, ४. एकत्व भावना, ५. अन्यत्व भावना, ६. अशुचि भावना ७. आस्रव भावना, ८. संवर भावना, ९. निर्जरा भावना, १०. लोक भावना, ११. बोधिदुर्लभ भावना, १२. धर्म भावना।

बारह भावनाओंके पद्य (पं० भूधरदास जी कृत)

दोहा

अनित्य भावना

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार ॥१॥

अशरण भावना

दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार।
मरती विरियाँ जीव को, कोई न राखनहार ॥२॥

संसार भावना

दाम बिना निर्धन दुःखी, तृष्णावश धनवान।
कहूं न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥३॥

एकत्व भावना

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय।
यों कबहूं इस जीव को, साथी सगा न कोय ॥४॥

अन्यत्व भावना

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय।
घर सम्पति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय ॥५॥

अशुचि भावना

दिपै चाम चादर मढ़ी, हाड़ पींजरा देह ।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह ॥६॥

सोरठा

आस्रव भावना

मोहनींद के जोर, जगवासी घूमैं सदा ।
कर्मचोर चहुं ओर, सरवस लूटैं सुध नहीं ॥७॥

संवर भावना

सतगुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमै ।
तब कछु बनै उपाय, कर्म चोर आवत रुकें ॥८॥

दोहा

निर्जरा भावना

ज्ञान दीप तप तैल भर, घर शोधे भ्रम छोर ।
या विध बिन निकसैं नहीं, पैठे पूरब चोर ॥९॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार ।
प्रबल पच इन्द्रियविजय, धार निर्जरा सार ॥१०।

लोक भावना

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान ।
यामें जीव अनादितैं, भरमत हैं विन ज्ञान ॥११॥

बोधिदुर्लभ भावना

धन कन कंचन राजसुख, सवहि सुलभ कर जान ।
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान ॥१२॥

धर्म भावना

जाचैं सुरतरु देय, सुख, चिंतत चिंता रैन ।
बिन जाचैं विन चिंतये, धर्म सकल सुख दैन ॥१॥

प्रश्नावली

१. भावना किसे कहते हैं ? भावना कितनी हैं ? नाम बताओ ।

२. अशरण, अन्यत्व, संवर, बोधिदुर्लभ भावना के पद्य बोलो।
३. भावनाओंके पद्य किसने बनाये हैं ?
४. बारह भावनासे जो तुम मतलब समझे हो, अपनी भाषामें बताओ।
५. किसी भी एक छन्द का अर्थ करो।

पाठ ११

अजीव

अजीव उन्हें कहते हैं जिनमें ज्ञान दर्शन न हो।

अजीव ५. प्रकारके होते है—१. पुद्गल, २. धर्म, ३. अधर्म, ४. आकाश, ५. काल।

१. पुद्गल उसे कहते हैं जिसमें स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण—ये चार गुण पाए जावें। ये चारों गुण एक साथ रहते हैं अर्थात इनमें से एक भी गुण जहां पाया जावे वहाँ चारों ही गुण होते हैं।

स्पर्श उसे कहते हैं जो स्पर्शन इन्द्रियसे जाना जावे। स्पर्शके ८ भेद हैं—शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, लघु, गुरु, कोमल, कठोर।

रस उसे कहते हैं जो रसना इन्द्रियसे जाना जावे। इसके ५ भेद हैं—अम्ल, मधुर, तिक्त, कटु कषायला।

गंध उसे कहते हैं जो घ्राण इन्द्रियसे जाना जावे। गंधके दो भेद हैं—सुगन्ध, दुर्गन्ध।

वर्ण उसे कहते हैं जो नेत्र इन्द्रियसे जाना जावे। वर्णके ५ भेद हैं—कृष्ण, नील, पीत, रक्त, श्वेत।

पुद्गलके २ भेद हैं…१. अणु (परमाणु), २. स्कन्ध।

(१) अणु पुद्गलके सबसे छोटे हिस्सेको कहते हैं, जिसका दूसरा भाग न हो सके। यह छोटा हिस्सा अपने आप होता है, यह न किया जा सकता है और न किसी इन्द्रियसे जाना जा सकता है।

(२) स्कंध दो या दो से ज्यादा मिले हुए परमाणुवों के पिण्ड को कहते हैं। जो कुछ दिखाई देता है वह सब स्कंध है तथा ऐसा भी स्कंध है जो दिखाई भी नहीं दे सकता है।

२. धर्मद्रव्य उसे कहते हैं जो चलते हुए जीव पुदगलोंके चलनेमें सहायक हो। जैसे मछलीके चलनेमें जल सहायक है। धर्म-द्रव्य अरूपी है और प्रेरणा करके चलाता नहीं है। जब जीव. पुदगल चलें तब उनके चलनेमें सहायक है। हां यदि धर्मद्रव्य न हो तो जीव पुद्गल चल नहीं सकते।

इस धर्मद्रव्यसे मतलब पुण्यसे नहीं हैं, किन्तु यह एक द्रव्य है।

३. अधर्मद्रव्य उसे कहते हैं जो चलकर ठहरते हुए जीव, पुद्गलोंके ठहरनेमें सहायक हो। जैसे चलकर ठहरने वाले मुसाफिरों के ठहरनेमें पेड़की छाया सहायक हो। अधर्मद्रव्य अरूपी है तथा यह किसीकी प्रेरणा करके ठहराता नहीं है। हां यह बात अवश्य हैं कि यदि अधर्मद्रव्य न हो तो जीव, पुदगल रुक नहीं सकते।

इस अधर्मसे मतलव पापसे नहीं है, किन्तु यह एक द्रव्य है।

४. आकाश उसे कहते हैं जो द्रव्योंको अवकाश (स्थान) दे।

आकाशके २ भेद हैं—१. लोकाकाश २ अलोकाकाश।

(१) लोकाकाश उसे कहते हैं जहाँ जीव, पुदगल, धर्म, अधर्म आकाश और काल—ये छहों द्रव्य पाए जावें।

(२) अलोकाकाश उसे कहते हैं जहां केवल आकाश ही आकाश हो अर्थात लोकसे बाहरके आकाशको अलोकाकाश कहते हैं यहां जीव, पुदगल, धर्म, अधर्म व कालद्रव्य नहीं है।

आकाश एक ही अखण्ड द्रव्य है, किन्तु कल्पना करके इसके २ भेद माने गये हैं।

५. कालद्रव्य उसे कहते हैं जो द्रव्योंके परिणमन (बदलने) में सहायक हो।

कालके २ भेद हैं—१. निश्चयकाल, २. व्यवहारकाल।

(१) निश्चयकालका लक्षण वर्तना है। कालद्रव्य असंख्यात हैं और लोकाकाशके एक-एक प्रदेशपर एक-एक कालद्रव्य ठहरा है।

(२) व्यवहारकाल सेकिण्ड, मिनट, घड़ी, घण्टा, प्रहर, दिन, सप्ताह, पक्ष, मास, ऋतु, वर्ष आदि समयको कहते हैं।

प्रश्नावली

१. अजीवके कितने भेद हैं ? नाम बतलाओ।
२. जो तुम्हें दिख रहा है, वह कौनसा द्रव्य है ?
३. पुद्गलका लक्षण लिखकर बताओ कि स्कन्ध कैसे बनता है ?
४. स्पर्श, रूप व रसके कितने भेद हैं ? नाम बताओ।
५. पुद्गलके कितने भेद है ? नाम बताओ।
६. तुम अणू तैयार कर सकते हो या नहीं और वह कैसे ?
७. धर्म व अधर्मद्रव्य किसे कहते हैं ?
८. किसीने यदि जप-तप किया तो धर्मद्रव्य कर लिया या नहीं ?
९. आकाश, अलोकाकाश, व्यवहारकालके लक्षण लिखो।
१०. क्या आकाशके दो टुकड़े हो सकते हैं ?

—:०—

पाठ १२

मेरा परिचय

मैं जीव हूं, अजीब नहीं। मैं चेतन हूं, देह अचेतन है अर्थात् जड़ है। मैं देहसे निराला हूं।

मेरा सर्वस्व धन चैतन्यस्वभाव है। जो प्रभुका स्वभाव है वह मेरा स्वभाव है। प्रभुका स्वभाव प्रकट है, मेरा स्वभाव अप्रकट है। जिस मार्गपर चलकर प्रभुका स्वभाव प्रकट हुआ है उसी मार्गपर चलकर मेरा भी स्वभाव प्रकट होगा।

मैं अपने भावको करता हूं अन्य पदार्थ अपना-अपना काम करते हैं। मैं किसी परपदार्थका कुछ नहीं करता, परपदार्थ मेरा कुछ

नहीं करते ।

मैं अपने सुख-दुःख शान्ति अशान्ति आदि भावको भोगता हूं, किसी परपदार्थको नहीं। परपदार्थके बारे में ज्ञान होनेके साथ जो कल्पना होती है उस कल्पनाको भोगता हूं। यदि कल्पना न करके सिर्फ ज्ञान ही करूं तो सहजआनन्द भोगूंगा।

विषयकषायधिकार मेरे स्वभाव नहीं। ये विकार मेरे स्वभाव से नहीं होते, कर्मोदयका निमित्त पाकर होते हैं। मै विकारसे निराला ज्ञानस्वरूप हूं।

प्रश्नावली

१. तुम कौन हो ?

२. तुम्हारा असली घन क्या है ?

३. तुम क्या कर सकते हो ?

४. तुम क्या भोगते हो ?

—०—

पाठ १३

कषाय और पाप

कषाय

कषाय उसे कहते हैं, जो आत्माको कसे अर्थात दुःख दे।

कषाय ४ प्रकारके होते हैं—१. क्रोध. २. मान, २, माया, ४. लोभ।

कषायके राग द्वेष आदि भी नाम हैं।

१ क्रोध गुस्सेको कहते हैं।

२. मान घमंड (गव, अहंकार) करनेको कहते हैं।

३. माया, छल, कपट, चुगली करनेको कहते हैं अर्थात मनमें अ र, बचनमें और, करें कुछ और।

४. लोभ लालच और तृष्णाको कहते हैं।

ये कषाय दुःख देने वाले हैं, इसलिए कषाय कभी नहीं करना चाहिए

पाप

कषायोंके कारण जो बुरे कार्य होते हें उन्हें पाप कहते हैं।

पाप ५ होते है—१. हिंसा, २. झूठ, ३. चोरी, ४. कुशील, ५. परिग्रह।

१. हिंसा:—कषायसे अपने व दूसरोंके प्राणोंका घात करना, दिल दुखाना व पीड़ा देना हिंसा है। हिंसा करने वाले हिंसक, निर्दय कहलाते हैं। हिंसा करनेसे इस भवमें और परभवमें दुःख उठाना पड़ता है, इसलिए हिंसा कभी नहीं करनी चाहिए।

२. झूठ:—कषायसे दूसरोंके अहित करने वाले वचन और जो बात जैसी है, उससे उल्टा कहनेको झूठ कहते हैं। झूठ बोलने वाले झूठ, चुगल, दगाबाज कहलाते हैं। लोकमें उनका विश्वास नहीं रहता, इसलिए झूठ कभी नहीं बोलना चाहिए।

३. चोरी :—दूसरेकी रखी हुई या भूली हुई या पड़ी हुई वस्तु को उठाकर रखना या काममें लाना या दूसरेको देना चोरी है। चोरी करने वाले लोकमें चोर, तस्कर डाकू कहलाते हैं। चोरी करने वाले सदा दुःखी रहते हैं, इसलिए चोरी कभी नहीं करनी चाहिए.

४ कुशील :—ब्रह्मचर्यके घात करनेको कुशील कहते हैं। इस पापके करने वाले सदा दुःखी रहते हैं, इसलिए कुशील पापसे बचते रहना चाहिए।

५. परिग्रह:—रुपया, पैसा, सोना, चाँदी आदिको परिग्रह कहते हैं। परिग्रहकी तृष्णा व संग्रहसे पुरुष सदैव संक्लिष्ट रहता है, इसलिए इसकी मूर्छाको छोड़ देना चाहिए।

प्रश्नावली

१. कषाय किसे कहते हैं ? कषायके भेद व नाम लिखो।

२. मान और मायाका लक्षण लिखकर यह बताओ कि तुम्हें सबसे बुरी कषाय कौनसी लगती है और क्यों ?

३. तुम्हारे कषायें कितनी हैं इनमें से कौनसी कषाय बहुत रहा करती हैऔर उसके कम करनेका क्या उपाय सोचा है।

४. कषाय करनेसे क्या हानि होती है ?

५. पापका लक्षण लिखकर पापके भेद नाम सहित लिखो।

६. हिंसा, चोरी, परिग्रहका लक्षण लिखकर यह बताओ कि सबसे बड़ा पाप कौनसा है और वह क्यों ?

७. यदि कोई गुरु शिष्यको पढ़ाता है तथा पाठ याद न होने या आचरण खराब करनेपर गुरु दण्ड दे तो गुरुको कौनसा पाप लगा !

—०—

पाठ १४

व्यसन

बुरे (खोटे) कामकी आदतको व्यसन कहते हैं।

व्यसन ७ होते हैं—१. जुवा खेलना, २. मास खाना, ३. मदिरापान करना, ४. शिकार खेलना, ५. चोरी करना, ६. परस्त्रीसेवन करना, ७. वेश्यासेवन करना।

(१) जुवा खेलना :—रुपया पैसा हार-जीतकी शर्त लगाते हुए तास, शतरंज आदि खेलना व सट्टा लगाना जुवा खेलना कहलाता है। जुवेसे चित्त सदा आकुलित रहता है, इसमें जीतने वाला भी तृष्णालु होकर दुःखी रहता है और अन्तमें निर्धन हो जाता है। जुवा खेलने वाले लोकमें बुरी दृष्टिसे देखे जाते हैं, इसलिए जुवा कभी नहीं खेलना चाहिए।

(२) माँस खाना—मनुष्य, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुन्द्रिय और पंचेन्द्रिय तिर्यंचके घातसे उत्पन्न हुए या स्वयं मरे हुए प्राणोका मांस भक्षण करना माँस खाना कहलाता है। मांसके खानेमें अनंत जीवों का घात होता है, क्योंकि माँसमें हर समय चाहे पका हो या कच्चा हो, अनंत जीव पैदा होते रहते हैं। मांस खाने वाले क्रूर निर्दय स्वभाव वाले हो जाते हैं और हिंसक कहलाते हैं, इसलिए मांस कभी नहीं खाना चाहिये।

(३) मदिरापान करनाः—मदिरा अर्थात मद्य शराबको कहते है, मद्य पीना मदिरापान कहलाता है। भंग, चरस, अफीम, तम्बाक बगैरह नशीली चीजोंका सेवन करना भी मदिरापानके दोष हैं। मदिरापानसे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तथा जीवोंका घात भी होता है और मद्यपायीका घात तो होता ही है तथा मद्यपायीका कोई भी विश्वास नहीं करता, इसलिए मदिरापान कभी नहीं करना चाहिए।

(४) शिकार खेलना—हरिण, रीछ, पशु, पक्षी आदि जानवरों को मारना शिकार खेलना कहलाता है। शिकार खेलने वाले क्रूर निर्दय होते हैं। इनके हाथमें शस्त्र देखते ही जानवर भयभीत हो जाते हैं। शिकार खेलना बड़ा पाप है, इसलिए शिकार कभी नहीं खेलना चाहिए।

(५) चोरी करना :—मालिककी आज्ञा बिना उसकी चीज उठा लेना या भय दिखाकर हड़पकर लेना चोरी है। चोरी करने वाले लोग सदा शंकित रहते हैं। जिसकी चीज चोरी चली जाती है, उसको बड़ा क्लेश होता है, इसलिए चोरी कभी नहीं करनी चाहिए।

(६) परस्त्री सेवन—अपनी स्त्री अर्थात जिसके साथ धर्मानुकुल विवाह हुआ हो, उसके सिवाय अन्य स्त्रियां परस्त्री है, उनके साथ संगम करना, कामभावसे बात करना परस्त्री सेवन कहलाता है परस्त्रीसेवनके भावमात्र करनेसे रावण मरकर नरक गया। परस्त्री सेवन महापाप है, इसका त्याग ही करना चाहिए।

(७) वेश्या के सेवन—वेश्याके साथ रमण करना, कामविकारका भाव रखना, सम्बन्ध रखना वेश्यासेवन कहलाता है। वेश्या व्यभिचारिणी स्त्री होती है, इसके सम्बंधसे व्यभिचारका दोष होता है। इससे बुरे कर्मोंका बंध होता है। वेश्यासेवनसे अनेक तरहके बुरे रोग पैदा हो जाते हैं। वेश्यागामीका जीवन व्यर्थ हो जाता है। इसलिए वेश्यासेवनका त्याग करना चाहिये।

इन सात व्यसनोंमें से एक भी व्यसन बड़ा दुःख देने वाला है, इसलिए सभी व्यसनोंका त्याग करना चाहिए।

प्रश्नावली

१. व्यसनका लक्षण लिखकर उसके भेद व नाम लिखो।
२. तुम्हारे सात व्यसनोंमें से कोईसा व्यसन है या नहीं ? है तोकौनसा और उसके छोड़नेका तुम्हारे भाव आया या नहीं ?
३. मांसभक्षण, मदिरापानके लक्षण लिखकर यह बताओ कि तुम्हारे किन-किन व्यसनोंका त्याग है या किन-किन व्यसनोंको नहीं करते।
४. प्रत्येक व्यसनसे क्या होता है ? क्रमवार लिखो।
५. परस्त्री व वेश्या किसे कहते हैं ?
६. सांप, बिच्छू, कीड़े बैठे हों या जा रहें हों तो उन्हें मारना चाहिए या नहीं ?

—०—

पाठ १५

रत्नत्रय व देव शास्त्र गुरु

सम्यग्दर्शनः—देव शास्त्र गुरुका सच्चा श्रद्धान करना, ७ तत्वोंका श्रद्धान करना, परद्रव्यसे भिन्न आत्माके सहजस्वभावका श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन कहलाता है।

सम्यग्ज्ञानः—जिस पदार्थका जैसा स्वरूप है वैसा जानना सम्यग्ज्ञान कहलाता है।

सम्यकचारित्रः—संसारमें रुलाने वाले रागद्वेष आदि क्रियाओं से दूर होकर आत्मस्वरूपमें स्थिर होना सम्यकचारित्र है।

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यकचारित्रको रत्नत्रय कहते हैं।

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यकचारित्र—इन तीनोंकी एकता ही मोक्षका साक्षात मार्ग है। रत्नत्रयकी पूर्णताके बिना मोक्ष नहीं होता है।

देव शास्त्र गुरु

देव :—शुद्ध आत्माको देव कहते हैं।

देव २ प्रकार के हैं—१. अरहंत, २. सिद्ध।

सिद्धभगवान आठ कर्मोंसे व शरीरसे रहित व रागद्वेषादि सर्वदोषोंसे रहित अनंतज्ञानी व अनंतसुखी हैं। वे लोकके अंतमें विराजमान हैं।

अरहंतदेव चार घातिया कर्मोंसे रहित, शरीरसहित, अनंत-ज्ञानी व अनंसुखी होते हैं। वे इसी मनुष्य लोकमें विराजमान रहते हैं जब तक वे सिद्ध नहीं होते। प्रा यः इनका हितोपदेश होता रहत है, जिससे जीवोंका कल्याण होता रहता है। ये वातराग (रागद्वेषा आदि १८ दोषोंसे रहित), सर्वज्ञ और हितोपदेशी होते हैं।

शास्त्र—उसे कहते हैं जो सच्चे देवका कहा हुआ हो, जिसका कोई खण्डन न कर सके, जो हितकारी उपदेशोंसे भरा हुआ हो और विषयकषायोंसे दूर रहनेकी शिक्षासे पूर्ण हो।

गुरु—उसे कहते हैं जो विषयोंकी आशा न करता हो। आरंभ परिग्रहसे रहित हो तथा ज्ञान, ध्यान, तप हो जिनका मुख्य कार्य हो।

सच्चे देव शास्त्र गुरुकी भक्ति, रुचि करनेसे सम्यग्दर्शनको प्राप्ति होती है।

प्रश्नावली

१. रत्नत्रय किसे कहते हैं? रत्नत्रयसे क्या लाभ है?

२. सम्यग्दर्शनका लक्षण लिखकर यह बताओ कि इस लक्षणसे सम्यग्दर्शन की कितनी बातें बताई है?

३. सम्यकचारित्रका लक्षण लिखकर यह बताओ कि नामवरी के लिए व्रत लेना सम्यकचारित्र है या नहीं और वह क्यों?

४. देवका लक्षण लिखकर यह बताओ कि पहिले आत्मा अरहंत बनता या सिद्ध?

५. अरहंतदेवका स्वरूप लिखो।

६. शास्त्रका स्वरूप लिखकर पांच शास्त्रोंके नाम लिखो।

७. गुरुका लक्षण लिखकर यह बताओ कि गाड़ी, डोला, झुंगी रखने वाले, साथ चौका रखने वाले, साथ-साथ चौका लिवा ले जाने वाले

व शहर में रमने वाले गुरु हो सकते हैं या नहीं ?

—:०:—

पाठ १६

शारदा स्तुति

शास्त्रसभासे पहिले या अन्तमें व अन्य समय भी यह स्तुति पढ़नी चाहिए।

सवैया

वीर हिमाचलतैं निकसी, गुरु गौतमके मुखकुण्ड ढरी है।
मोह महाचल भेद चली, जग की जड़तातप दूर करी है।
ज्ञान पयोनिधि माँहि रली, बहुभंग तरंगनिसौं उछरी है।
या शुचि शारद गंगनदी प्रति, मैं अञ्जुलि कर शीश धरी है ॥१॥
या जगमन्दिर में अनिवार, अज्ञान अंधेर छयौ अति भारी।
श्री जिनकी ध्वनि दीपशिखासम जो नहिं होत प्रकाशनहारी ॥
तो किस भाँति पदारथ पांति, कहां लहते रहते अविचारी।
या विध सन्त कहैं धनि है, धनि है जिन बैन बड़े उपकारी ॥२॥

—दोहा—

या वाणी के ज्ञानतैं सूझै लोकालोक
सो बाणी मस्तक चढ़ौ सदा देत हूं धोक ॥३॥

शारदा, सरस्वती, जिनवाणी, हितविद्या, केवलिकन्या, वाङमयगंगा, जगदम्वा—ये सब शारदाके नाम हैं।

प्रश्नावली

१. शारदा स्तुतिका दूसरा छन्द लिखो।
२. इस स्तुतिको किस समय पढ़ना चाहिए ?
३. अन्तिम दोहेका अर्थ लिखो।
४. शारदाके क्या क्या नाम हैं ? लिखो।

—:०:—

पाठ १७

सत्संग

सत्संगका अर्थ यह है—सत् अर्थात् सज्जन पुरुष उनका संग अर्थात् सहवास। सतपुरुषोंके साथ रहनेको सत्संग कहते हैं।

जीवनपर संगका गहरा प्रभाव पड़ता है। व्यसनी, हिंसक, चोर, व्यभिचारी, हीनभाव वालोंके संगमें रहनेसे उन जैसा चरित्र हो जाता है और सत्यवादी, व्रती, अहिंसक, सुशील, निर्मल परिणाम वालोंके संगमें रहनेसे उन जैसा चरित्र हो जाता है। इसलिए हित चाहने वाले भाइयोंको चाहिए कि वे सदैव सत्संगमें रहें।

सज्जन पुरुष वे कहलाते हैं जो संसारके वैभवोंकी तृष्णा नहीं रखते और आत्माके स्वरूपको ध्यानमें रखकर अपने आचार-विचार शुद्ध रखते हैं। वे न कभी किसीके सतानेका भाव रखते हैं, न कभी ऐसी बात बोलते हैं जिनसे दूसरेका अहित हो, न कभी किसीकी रखी या भूली हुई किसी प्रकारकी वस्तु चुराते हैं, न कभी परनारी को बुरी दृष्टिसे देखते हैं। धन, वैभव, प्रतिष्ठा, अधिकार, नाम बढ़ाने का भी वे भाव नहीं रखते हैं, इसी कारण सत्पुरुषोंके मिथ्यात्व, अन्याय व अभक्ष्यका सेवन नहीं होता।

बालकोंको चाहिए कि वे हमेशा सत्संगकी खोज करें और सत्संगमें रहें। गाली देने वाले लड़ने वाले, ब्रह्मचर्यका घात करने वाले, चोर व स्वार्थी बालकोंका साथ न करें। यदि बन सके तो अन्य बालकोंको हितकारी मधुर वचनोंसे सच्चे मार्गपर लगावें।

बाल्य जीवन एवं कोमल जीवन है। इस अवस्थाकी डाली हुई आदत बहुत मुश्किलसे छूटती है इसलिए बालकोंको संग करने के लिए सावधान रहना चाहिये तथा सत्संगमें रहकर आत्मोन्नति करनी चाहिए। सत्संगसे लाभ लेनेके लिए देवदर्शन जाप सामायिक व धार्मिक ग्रंथोंका पठन बालकोंको नित्य करना चाहिए।

प्रश्नावली

१. सत्संगका अर्थ क्या है व सत्संगसे क्या लाभ हैं ?

२. सज्जन पुरुषोंकी पहचान क्या है ?

३. व्यसनी पापीके संगसे क्या हानि है ?

४. सत्संगकी आवश्यकता बालकोंको क्यों है ?

५. सत्संगसे लाभ उठानेके लिए तुम्हें क्या प्रवृति डालनी चाहिए ?

—:०:—

पाठ १६

मिथ्यात्व

पदार्थका जैसा स्वरूप है वैसा विश्वास न करना, विपरीत विश्वास करना मिथ्यात्व है। धन, मकान, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि अपने से सर्वथा जुदे हैं फिर भी उन्हें अपने समझना मिथ्यात्व है, क्योंकि पदार्थका जैसा स्वरूप है वैसा विश्वास नहीं हुआ।

शरीरका स्वरूप जीवसे बिल्कुल जुदा है फिर भी शरीरको जीव समझना मिथ्यात्व है, क्योंकि पदार्थका जैसा स्वरूप है वैसा विश्वास नहीं हुआ।

क्रोधादि कषाय जीवका स्वरूप नहीं है और ये कषाय जीवको संसार-क्लेशमें पटकने वाले हैं, फिर भी कषाय आदिको अपना स्वरूप समझना और उनसे अपनी भलाई समझना मिथ्यात्व है, क्योंकि पदार्थका जैसा स्वरूप है वैसा विश्वास न हुआ।

खोटे देव, खोटे शास्त्र, खोटे गुरुकी सेवा करना, देवी, दहाड़ी, होली नदी, पेड़, पशु आदि पूजना मिथ्यात्व है, क्योंकि पदार्थका जैसा स्वरूप है वैसा विश्वास न हुआ।

जब तक मिथ्यात्व दूर नहीं होता तब तक जीव शान्तिका मार्ग नहीं पा सकता। इसलिए मोक्ष अर्थात सच्चा सुख चाहने वालों को मिथ्यात्वका बिल्कुल त्याग कर देना चाहिए।

प्रश्नावली

१. मिथ्यात्व किसे कहते है ? मिथ्यात्वसे क्या हानि हैं ?

२. खोटे देव, शास्त्र, गुरुको पूजना योग्य है या नहीं ?

३. कषायको अपना स्वभाव समझना क्या मिथ्यात्व है और वह क्यों ?

—:※:—

पाठ १९

अन्याय

जिसमें अपना व दूसरेका अहित हो उस कार्यके करनेको अन्याय कहते हैं ।

अन्याय करनेसे इस भवमें तथा परभवमें बहुत क्लेश सहने पड़ते हैं, इसलिए अन्याय कभी नहीं करना चाहिए ।

'आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्—जो बात अपनेको बुरी मालूम होती हो, वह बात दूसरोंके लिए कभो मत करो ।

खुदका दिल दुखाना बुरा मालूम होता है तो तुम भी दूसरों को कभी मत सताओ ।

तुम्हारे विषयमें निंदा, झूठ बात व चुगली होना बुरा मालूम होता है तो तुम भी किसीको निंदा मत करो, झूठ बात न बोलो, चुगली मत करो ।

तुम्हारी चीज कोई चुरा ले जाय तो तुम्हें दु:ख होता है, तब तुम भी किसीको कोई चीज न चुराओ ।

मां-बहिन आदि पर कोई दृष्टि डाले तो बुरा मालूम होता है है, फिर तुम भी किसीकी मां-बहिन पर दृष्टि न डालो ।

खुदका ठगाया जाना बुरा मालूम होता है, तोतुम भी किसीको मत ठगो ।

आवश्यकतासे अधिक वस्तुओंकी तृष्णा मत करो । धनकोदया में, धार्मिक कार्यमें बिद्या पढ़ाने आदि शुभ कार्यमें लगाते रहो ।

अन्याय करने वाला लोगोंकी दृष्टिमें गिर जाता है और स्वयं पाप कमाकर नरक आदि दुर्गतिको जाता है। अतः अन्यायका त्याग करके दयामय प्रवत्ति रखनी चाहिए।

प्रश्नावली

१. अन्याय किसे कहते हैं व अन्यायसे क्या हानि है ?

२. अन्यायसे बचनेके लिए क्या करना चाहिए ?

३. अन्याय विषय पर अपनी भाषामें एक निबन्ध लिखो।

—:०:—

पाठ २०

अभक्ष्य

अभक्ष्य उसे कहते हैं जो खाने योग्य न हो।

ऐसे पदार्थ ५. प्रकारके होते हैं—१. त्रसघात, २. अनंत स्थावरघात, ३. प्रमादकारक, ४. अनिष्ट, ५. अनुपसेव्य।

त्रसघात अभक्ष्य—वे हैं जिन पदार्थोंके खानेसे त्रसजीवका घात हो। जैसे गोभीका फूल, पुराना अचार, बाजारकी सड़ी चीज, मांस, मुरब्बा, अंडे, शराब आदि।

अनन्तस्थावरघात अभक्ष्य—वे हैं जिनके सेवनसे अनन्त स्थावर जीवोंका घात होता हो। जैसे मूली, गाजर, पालकके पत्ते, घुइयां, सकरकन्दी आदि।

प्रमादकारक अभक्ष्य—वे हैं जो प्रमाद बढ़ाने वाले हों। जैसे अफीम, चरस गाँजा आदि।

अनिष्ट अभक्ष्य—वे हैं जिन पदार्थों के सेवनसे ज्वर खाँसी आदि रोग बढ़ें। जैसे खाँसीके रोग वालेको बर्फी, ज्वर वालेकोघी मिठाई आदि।

अनुपसेव्य अभक्ष्य—वे हैं जिन्हें भले पुरुष सेवन नहीं कर सकते हैं। जैसे—मूत्र, लार आदि।

त्रसघातके दोष

विशेष श्रावक त्रसघातके अतिचार (दोष) को भी नहीं लगाते। मर्यादा से बाहरका पदार्थ खाना त्रसघात अभक्ष्यका अतिचार है।

मर्यादा

(१) वर्षा ऋतुके मध्य ८, ग्रीष्म ऋतुके मध्य १५, शीत ऋतुके मध्य ३० दिनकी मर्यादा वाले पदार्थ—बनाया हुआ बूरा, काष्ठिक चूर्ण, चन्दन का बुरादा आदि पदार्थ जो काष्ठसे तैयार किए जाते हैं।

(२) वर्षा ऋतुके मध्य ३, ग्रीष्म ऋतुके मध्य ५, शीत ऋतुके मध्य ७ दिनकी मर्यादा वाले पदार्थः—गेहूं,आदि अनाजका आटा, धनिया, हल्दी आदि मसालोंका चूर्ण, घीमें भुना हुवा आटा, बेसन आदि के लड्डू वगैरह, जिसमें पानीका अंश भी न डाला हो ऐसे पकवान आदि।

(३) केवल १ रात्रि बसी हुई मर्यादाकी वस्तुयें:—बूंदी, बूंदीके लड्डू, मावा, अलग घीमें भुने बिना मावाके पेड़े, पका दूध, विशेष गर्म किया हुआ जल, अचार आदि।

(४) चार प्रहर अर्थात् दिन ही दिनकी मर्यादाकी वस्तुयें:—रोटी, परामठा, पूड़ी, भुजिया, पकौड़ी, हलुवा आदि जिन अन्नकी चीजों में पानी पड़ता है और घी तैलमें पकाने पर पानीका अंश रहता है तथा सब्जीका शाक आदि।

(५) दो प्रहर अर्थात् ६ घण्टेकी मर्यादा वाले पदार्थः—दाल, भात आदि जो अन्नकी चीज हैं और पानीमें ही पकाई जावें तथा लौंग आदिसे प्रासुक किया हुआ जल, फलरस आदि।

(६) अन्तर्मुहूर्त (४८ मिनट) की मर्यादा वाले पदार्थः—दुहरे गाढ़े उज्ज्वल छन्नेसे छना हुआ जल, पिसा हुआ नमक, छना हुआ कच्चा दूध, मक्खन आदि।

प्रश्नावली

१. अभक्ष्य किसे कहते हैं, अभक्ष्य कितने प्रकारके हैं? नाम लिखो।

२. त्रसघात नामके अभक्ष्यका लक्षण लिखकर त्रसघात अभक्ष्यके ७ उदाहरण लिखो।

३. त्रसघात व अनन्त स्थावरघातमें मोटा दोष कौनसा है ?

४. त्रसघातका अतिचार क्या है ?

५. अनिष्ट अभक्ष्य किसे कहते है ?

६. तीनों ऋतुओमें आटेकी क्या मर्यादा है ?

७. बूंदी, मावा, पक्का दूध, परामठा, पकौड़ी, दाल, भात, छना हुआ कच्चा दूध—इनकी मर्यादा लिखो।

पाठ २१

आलोचना पाठ

दोहा

बंदौं पांचों परमगुरु चौबीसों जिनराज।
करूं शुद्ध आलोचना शुद्धि करनके काज॥१॥

सुनिये जिन अरज हमारी, हम दोष किये अति भारी।
तिनकी अब निर्वृतिकाज, तुव शरण लही जिनराज॥२॥
इक वे ते चउ इन्द्री वा, मन रहित सहित जे जीवा।
तिनकी नहिं करुणा धारी, निर्दय ह्वै घात विचारी॥३॥
संरंभ समारम्भ आरम्भ, मन, वच, तन कीने प्रारंभ।
कृत कारित मोदन करिके, क्रोधादि चतुष्टय धरिके॥४॥
शत आठ जु इन भेदन तैं, अघ कीने पर छेदनतें।
तिनकी कहुं को लौं कहानी, तुम जानत केवलज्ञानी॥५॥
विपरीत एकान्त विनयके, संशय अज्ञान कुनय के।
वश होय घोर अघ कीने, वचतें नहिं जात कहीने॥६॥
कुगुरुन की सेवा कीनी, केवल अदया कर भीनो।
याविध मिथ्यात्व बढ़ायो, चहुँ गति मधि दोष उपायो॥७॥

हिंसा पुनि झूठ जो चोरी, परवनितासौं दृग जोरी।
आरम्भ परिग्रह भीनो, पन पाप जु याबिध कीनो ॥८॥
सपरस रसना घ्रानन को, दृग कान विषय सेवन को।
बहु काम किए मन माने कछु न्याय अन्याय न जाने ॥९॥
फल पंच उडम्बर खाये मधु मास मद्य चित चाये।
नहिं अष्ट मूल गुण धारे, सेये कुविसन दुखकारे ॥१०॥
दुइबीस अभख जो गये, सो भी निश दिन भुञ्जाये।
कछु भेदाभेद न पायो ज्यों त्यों कर उदर भरायौ ॥११॥
अनन्तानुबन्धी सो जानो प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानो।
संज्वलन चौकड़ी गुनिये, सब भेद जु षोडस मुनिये ॥१२॥
परिहास अरति रति शोग, भय ग्लानि त्रिवेद संजोग।
पनवीस जु भेद भये इम, इनके वश पाप किये हम ॥१३॥
निद्रा वश शयन कराया, सुपने मधि दोष लगाया।
फिर जागि विषयवन धायौ, नानाविध विषफल खायो ॥१४॥
आहार विहार निहारा, इनमें नहिं जतन विचारा।
बिन देखे धरा उठाया, बिन शोधा भोजन खाया ॥१५॥
तब ही परमाद सतायो, बहुविध विकलप उपजायो।
कछु सुधि बुधि नाहिं रही है, मिथ्यामति छाया गई है ॥१६॥
मर्यादा तुव ढिग लीनो, ताहूमें दोष जु कीनो।
भिन भिन अब कैसे कहिये तब ज्ञान विषैं सब पइये ॥१७॥
हा हा मैं दुठ अपराधी, त्रसजीवन राशि विराधी।
थावरकी ज‍तन न कीनी, उर में करुणा नहिं लीनी ॥१८॥
पृथिवी बहु खोद कराई, महलादिक जागां चिनाई।
पुनि बिन गाल्यौ जल ढोल्यो, पंखातैं पवन विलोल्यो ॥१९॥
हा हा मैं अदयाचारी, बहु हरित जु काय बिदारी।
ता मधि जीवनके खंदा, हम खाये धरि आनन्दा ॥२०॥
हा हा परमाद बसाई, बिन देखे अगनि जलाई।
ता मध्य जीव जे आये, तेहू परलोक सिधाये ॥२१॥

बीध्यौ अनराशि पिसायौ, ईंधन बिन शोध जलायौ।
झाडू ले जगा बुहारी, चिटियादिक जीव बिदारी ॥२२॥
जल छानि जिवानी कीनी, सो हू पुनि डारि जु दीनी।
नहिं जल थानक पहुंचाई, किरिया बिन पाप उपाई ॥२३॥
जल मल मोरिन गिरवायो, कृमिकुल बहुघात करायौ।
नदियन विच चीर धुवाये, कोसन के जीव मराये ॥१४॥
अन्नादिक शोध कराई, ता मध्य जीव निसराई।
तिनको नहिं जतन कराया, गलियारें धूप डराया ॥२५॥
पुनि द्रव्य कमावन काज, बहु आरम्भ हिंसा साज।
कीन्हा तृष्णावश भारी, करुणा नहिं रंच विचारी ॥२६॥
इत्यादिक पाप अनन्ता, हम कीने श्री भगवन्ता।
सतत चिरकाल उपाई बानीतैं कहो न जाई ॥२७॥
ताको जु उदय अब आयो, नानाविधि मोहि सतायो।
फल भुञ्जत जिय दुख पावें, बचत कैसे करि गावें ॥२८॥
तुम जानत केवलज्ञानी दुख दूर करो शिवथानी।
हम तो तुव शरण लही है, जिन तारण विरद सही है ॥२९॥
इक गांवपति जो होवे, सो भी दुखिया दुख खोवे।
तुम तीन भुवनके स्वामी, दुख मेटो अन्तर्यामी ॥३०॥
द्रोपदि को चीर बढ़ायो सीता प्रति कमल रचायौ।
अंजन से किये अकामी, दुख मेटो अन्तर्यामी ॥३१॥
इन्द्रादिक पद नहिं चाहूं, विषयन में नहीं लुभाउं।
रागादिक दोष हरीजे, परमातम निजपद दीजे ॥३२॥

❁ दोहा ❁

दोषरहित जिन देव जो निजपद दीजे मोय।
सब जीवन को सुख बढ़े आनंद मंगल होय ॥३३॥
अनुभव माणिक पारखी जौहरि आप जिनंद।
ये ही वर मोहि दीजिए चरण, शरण आनन्द ॥३४॥

आलोचना :—अपने पापोंकी शुद्धि के लिए अपने दोषोंका वर्णन करना आलोचना है। आलोचना प्रतिमाके समक्ष या देव, गुरुके समक्ष करनी चाहिए।

प्रश्नावली

१. आलोचना किसलिए की जाती है ?

२. हिंसा पुनि झूठ जो चोरी यहांसे लेकर 'ज्यों त्यों कर उदर भरायौ' यहां तक लिखो।

३. पृथिवी बहु खोद कराई' इस छन्दका मतलब लिखो।

४. मंगलाचरणके दोहेमें किन्हें नमस्कार किया है ? उनके नाम बताओ।

५. आलोचना पाठ पढ़नेसे तुम्हारे मनमें क्या बात पैदा होती है ?

—०○—

संस्कृत प्रार्थना

धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते:।
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः ॥
धर्मान्नास्त्यपरः सुहृद्धवभृता धर्मस्य मूल दया।
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म मां पालय ॥

पाठ २२

बालकों के लिए सतरह नियम

अच्छा और सुखमय जीवन बनाने के लिए इन नियमों का पालन करो :—

१. प्रातःकाल जल्दी उठकर नमस्कार मन्त्रका जाप करना।

२. शिक्षक, माता, पिता, भाई आदि गुरुजनोंको प्रणाम आदि करना।

४. रोजका पाठ रोज ही पूरी तरहसे याद कर लेना।

५. चौबीस घंटेका लिखित ठीक प्रोग्राम बनाकर उसके अनुसार चलना।

६. सबसे यथायोग्य विनयपूर्वक उत्तमसे उत्तम बात बोलना।

७. कम से कम एक धार्मिक ग्रन्थका प्रतिदिन अध्ययन, मनन करना।

८. हिंसारहित, सादा भोजन दिनमें ही यथायोग्य कमसे कम बार करके सन्तुष्ट रहना।

६. यथाशक्ति दीन दुःखी जनोंका उपकार करते रहना।

१०. पराई किसी भी वस्तुको नहीं चाहना, न उसकी आशा करना।

११. गुस्सा घमण्ड मायाचार व तृष्णासे दूर रहनेका भाव बनाना।

१२. कारणवश कषाय अधिक न हो जाए, उस समय मौनरहना।

१३. सिनेमाघर नाटकघर वेश्यागृह आदि कुस्थानोंमें नहीं जाना

१४. भंग तमाखू, अफीम आदि नशीली चीजोंका प्रयोग नहीं करना।

१५. चमड़ की वस्तु थैला, चैन, बक्स, टोपी, कोट आदिका उपयोग न करना।

१६. रेशमी बहुत पतला चटकीला वस्त्र नहीं पहिनना।

१७. आतिशबाज़ी, पटाखा बजाना आदि हिंसाजनक विनोद कभी भी नहीं करना।

॥ समाप्त ॥